पाठ 6

औपनिवेशिक भारत में धार्मिक एवं सामाजिक जागृति

19 वीं सदी के प्रारम्भ के समाज : - आज का भारतीय समाज आरम्भिक 19 वीं सदी से बहुत भिन्न था | समाज की प्रगति दो मुख्य कारणों एक शिक्षा का अभाव और दूसरा महिलाओं की अधिकता के कारण रुकी हुई थी | भारतीय समाज के कई वर्ग रूढ़िवादी थे और उन प्रथाओं को मानते थे जो मानवीय विचारों के विरुद्ध थी |

शिक्षा का अभाव :- उस समय अधिकांश लोग अशिक्षित थे | सम्पूर्ण संसार में शिक्षा बहुत थोड़े से लोगों उच्चतम जाति के पुरुषों के पास ही थी | भारत में वेद जो संस्कृत में लिखे गए जिनका प्रयोग ब्राह्मण वर्ग ने ही किया व धार्मिक ग्रंथों पर भी इन्हीं लोगों का ही नियंत्रण था | मंहगे अनुष्ठानों को प्रोत्साहित किया | इसी तरह यूरोप में भी बाइबिल लैटिन भाषा में लिखी गई थी | यह चर्च की भाषा थी और उनके पादरी इन धार्मिक ग्रंथो की अपने अनुसार व्याख्या करते थे |

महिलाओं की स्थिति :- 19 वीं सदी में अधिकांश महिलाओं का जीवन बहुत कठिन था | कुछ सामाजिक प्रथाएं जैसे - कन्या बाल विवाह, सती प्रथा, भ्रूण हत्या और बहु विवाह आदि भारतीय समाज में प्रचलित थी | बड़ी उम्र के पुरुषों से शादी करना एक पत्नी से ज्यादा पत्नी रखना कई धर्म एवं जातियों में प्रचलित था | देश के कुछ भागों में सती प्रथा का प्रचलन था | जिसमें एक विधवा औरत को अपने पति की चिता पर मजबूत होकर जलना पड़ता था | महिलाओं का सम्पति और शिक्षा पर कोई अधिकार नहीं था | दहेज़ तथा पैतृक सम्पति में साझेदारी से उनकी स्थिति और भी ख़राब हो गई |

परिवर्तन की इच्छा :सामाजिक-धार्मिक जागृति :- राजा राम मोहनराय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, स्वामी दयानंद सरस्वती, ज्योतिबा फूले, सर सैयद अहमद खान और पंडिता रमाबाई जैसे कई समाज सुधारक समझ गए थे कि अज्ञानता और समाज में पिछड़ापन ही प्रगति और विकास में बाधा के लिए जिम्मेदार थे | इस बात का उनको अहसास तब हुआ जब वे यूरोपियों के साथ सम्पर्क में आये और पाया कि उनका यह जीवन दुनिया के अन्य भागों से बहुत अलग है | इन समाज सुधारकों की समाज से सुधार लाने की इच्छा इतनी प्रबल थी कि परम्परागत रूढ़िवादी भारतीयों के विरोध तथा चुनौतियों के बावजूद समाज में वांछित परिवर्तन लाने हेतु अनेक आन्दोलन शुरू किए | स्वामी दयानंद सरस्वती और राजा राम मोहनराय जैसे - प्रबुद्ध लोगों ने धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करके प्रचलित धर्मिक और सामाजिक प्रथाओं की आलोचना की | उनके अनुसार पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समानता और स्वतंत्रता की अवधारणा चाहिए | यह आधुनिक और वैज्ञानिक शिक्षा के द्वारा ही संभव था | यह आन्दोलन "सामाजिक-धार्मिक आन्दोलन के नाम से जाना जाने लगा क्योंकि उन्होंने महसूस किया की धर्म में सुधार किये बिना समाज में कोई भी परिवर्तन संभव नही है |

जाति व्यवस्था :- प्राचीनकाल में भारतीय समाज में जाति व्यवस्था मूलत : व्यवसाय पर आधारित थी | समय बीतने के साथ उच्च जाति के दवारा धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या व निम्न जाति के धार्मिक ग्रंथो से दूरी के कारण कई अन्धविश्वासी प्रथाओं का प्रचलन शुरू हुआ | इसके परिणाम स्वरूप उच्च जाति के हाथों में सत्ता आ गई और निम्न जाति के शोषण की शुरुआत हो गई | हिन्दू समाज वर्ण व्यवस्था ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, पर आधारित था | इस व्यवस्था के अनुसार लोगों को उनके व्यवस्था के आधार पर विभाजित किया गया था | जो लोंग ईश्वर की प्रार्थना और पूजा पाठ के काम में लगे हुए थे, उन्हें ब्राम्हण, युद्द में लगे हुए क्षत्रीय व जिनका व्यवसाय कृषि तथा व्यापार

था | वे वैश्य के रूप में जाने जाते थे और जो उपरी तीनों वर्णों की सेवा कार्य में लगे थे | वे शूद्र कहे जाते थे | ये वर्ण व्यवस्था व्यवसाय से वंशानुगत में बदल गई | एक विशेष जाति में पैदा हुआ व्यक्ति अपनी जाति को बदल नहीं सकता बल्कि अपने काम को बदल सकता था | इससे समाज में असमानताओं ने जन्म लिया | इससे निम्न जातियों का शोषण होने लगा | जिसके कारण जाति व्यवस्था एक स्वच्छ लोकतान्त्रिक और प्रगतिशील समाज को बनाने में बाधक हो गई | ब्रह्म समाज, आर्य समाज, राम कृष्ण मिशन था सुधारक जैसे ज्योतिबा फुले, नारायण गुरु, विवेकानन्द, महात्मा गाँधी तथा और कई दूसरों ने इन सबका द्रढ़ता से विरोध किया | संविधान के अनुच्छेद 14 में उल्लेख किया गया है , कि "धर्म, मूलवंश, जाति लिंग, जन्म स्थान के आधार पर किसी नागरिक के साथ भेदभाव नहीं किया जायेगा |

शैक्षिक परिदृश्य:- 19 वीं सदी में शिक्षा पारम्परिक पाठशालाओं, मदरसों, मस्जिदों और गुरुकुलों में प्रदान की जाति थी | धार्मिक शिक्षा के साथ संस्कृत, व्याकरण, गणित, धर्म तथा दर्शन जैसे विषयों को पढाया जाता था | विज्ञान और प्रौधोगिकी की पाठ्यक्रम में कोई जगह नहीं थी | कुछ समुदायों में तो लड़कियों को शिक्षित करने की भी अनुमति नहीं थी | वास्तविकता में शिक्षा और जागरूकता की कमी ही भारतीयों के बीच सामाजिक और धार्मिक पिछड़ेपन का मूल कारण थी |

19 वीं सदी में कई भारतीय -धार्मिक सुधार :- 19 वीं सदी में कई भारतीय विचारक और सुधारक समाज में सुधार लाने के लिए आगे आए और भारतीय जनता को जगाने की पहल की जैसे :-

राजा राम मोहन राय :- राजा राम मोहन राय का जन्म बंगाल के एक ब्राहमण परिवार में हुआ | उन्हें कई भाषाओँ का ज्ञान था | उन्होंने 1828 में ब्रहम समाज की स्थापना की | उन्होंने सती प्रथा जैसी प्रथाओं के विरोध की पहल की, बहुदेववाद, मूर्ति पूजा की आलोचना व विरोध किया व अर्थहीन रिवाजों का खण्डन किया |

ईश्वर चन्द विद्यासागर :- ईश्वर चन्द विद्यासागर एक महान विद्वान् और सुधारक थे | 1856 में सबसे पहले हिन्दू विधवा पुनविवाह अधिनियम उनके अथक प्रयासों के कारण प्रस्तुत किया गया | उन्होंने बाल-विवाह तथा बहुविवाह के विरुद्ध अभियान भी चलाया | वह महिलाओं की शिक्षा के चैम्पियन थे | उनकी मदद से बंगाल में लगभग 35 लडकियों के स्कूल खोले गए |

स्वामी दयानन्द सरस्वती:- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 1875 में उतर भारत में हिन्दू धर्म को सुधारने के लिए आर्य समाज की स्थापना की | वे वेदों को समस्त ज्ञान का आधार मानते थे | उनकी ,सत्यार्थ प्रकाश' सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक थी | इन्होने महिला की दशा में सुधार, अश्पृश्यता और वंशानुगत जाति व्यवस्था के विरुद्ध कठोर लड़ाई की | उन्होंने संस्कृत और वैदिक शिक्षा के साथ अंग्रेजी और आधुनिक की शिक्षा को भी प्रोत्साहित किया |

रामकृष्ण परमहंस एवं स्वामी विवेकानन्द :- रामकृष्ण परमहंस (1836-1886) ने धर्मो की आवश्यक एकता और एक आध्यात्मिक जीवन जीने की जरुरत पर प्रकाश डाला | स्वामी विवेकानन्द (1863-1902) उनके महत्वपूर्ण शिष्य थे | विवेकानन्द ने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस के नाम से "रामकृष्ण मिशन" की स्थापना की | उन्होंने एकता और सभी धर्मो की समानता पर बल दिया | प्राचीन सामाजिक रीतियों को हटाने एवं जाति बंधन और अश्पृश्यता को दूर करने की कोशिश की | उन्होंने महिलाओं के सम्मान, उत्थान और शिक्षा के लिए काम किया |

सर सैय्यद अहमद खान :- सर सैयद अहमद का मानना है कि मुसलमानों के धार्मिक सामाजिक जीवन में सुधार आधुनिक पश्चिमी वैज्ञानिक ज्ञान और संस्कृति अपनाने से हो सकता है | उन्होंने मुसलमानों में सामाजिक और शैक्षिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए विभिन्न कार्य किए | उन्होंने मुस्लिम महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए कड़ी मेहनत की | वे पर्दाप्रथा, बहुविवाह, आसान तलाक और लडकियों के बीच शिक्षा की कमी के विरुद्ध थे | उन्होंने 1864 में गाजीपुर में (वर्तमान में उत्तर - प्रदेश) एक अंग्रेजी स्कूल की स्थापना की थी | 1875 में अलीगढ मुस्लिम विश्व विद्यालय के रूप में विकसित हुआ | उन्होंने अंग्रेजी पुस्तकों के अनुवाद के लिए एक साईटिफिक सोसायटी कि स्थापना की | मुसलमानों के बीच सामाजिक सुधार, जागरुकता व विशेषकर आधुनिक शिक्षा के लिए पत्रिका प्रकाशित करके चलाया गया | सुधार आन्दोलन अलीगढ आन्दोलन के नाम से जाना गया |

ज्योतिराव गोविन्दराव फुले :- महाराष्ट्र से ज्योतिराव गोविन्द फुले ने किसानों और निम्न जातियों को अधिकार दिलाने का काम किया | उनके साथ उनकी पत्नी सावित्री बाई फुले ने भी निम्न जातियों की महिलाओं को शिक्षित करने के लिए सबसे अधिक प्रयास किए | उन्होंने लडकियों के लिए 1848 में पूना में स्कूल खोला | विधवा विवाह के लिए किए गए प्रयासों के लिए उनकों आज भी याद किया जाता है |

न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानाडे :- न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानाडे ने पूना में सार्वजानिक सभा की तथा 1867 में मंबई में प्रार्थना समाज की स्थापना की | जाती व प्रतिबन्ध को हटाने, बाल विवाह को समाप्त करने विधवाओं के बाल कटवाना, विवाह तथा अन्य सामाजिक कार्यो में लगने वाली भारी लागत, महिलाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने तथा विधवा विवाह आदि के लिए कार्य किया | वे "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस" के संस्थापक सदस्य भी थे |

एनी बेसेंट :- एनी बेसेंट थियोसोफिकल सोसायटी की सदस्य थी | ये 1898 में पहली बार भारत आई थी | उन्होंने विश्व बंधुत्व का प्रचार किया | उन्होंने आधुनिक भारत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया था | एनी बेसेंट 1907 में थियोसोफिकल सोसायटी की अध्यक्ष बन गई | इन्होंने बनारस में सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज खोला | जो 1917 से यह विश्वविद्यालय हिन्दू विश्वविद्यालय का हिस्सा बन गया |

मुस्लिम सुधार आन्दोलन :- आधुनिक शिक्षा के प्रसार व सामाजिक कुप्रथाओं को दूर करने के लिए कई आन्दोलन शुरू किए गए थे | अब्दुल लतीफ ने 1863 में कलकता में "मोहम्मद साक्षरता सोसायटी" स्थापित की जिसने मध्यम व उच्च मुसलमानों के बीच तथा हिन्दू मुस्लिम एकता को बढ़ावा देने के लिए काम किया | बंगाल के शरीयतुल्ला "फरायाजी" आन्दोलन के प्रवर्तक ने बंगाल में किसानों के लिए काम किए | मिर्जा गुलाम अहमद ने 1899 में "अहमदिया आन्दोलन" की स्थापना की | जिसके अंतगर्त कई विद्यालय व कॉलेज देश भर में खोले गए | वे मानवीय चरित्र के साथ ही हिन्दू और मुसलमानों के बीच एकता को पसंद करते थे | आधुनिक भारत के महानतम कवियों में से एक कवि मोहम्मद इक़बाल (1876-1938) थे | जिन्होंने कविताओं के माध्यम से पीढ़ियों के दार्शनिक और धार्मिक दृष्टिकोण को प्रभावित किया | मोहम्मद इक़बाल ने "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा" प्रसिद्ध गीत लिखा |

अकाली सुधार आन्दोलन :- अमृतसर और लाहौर में "दो सिंह सभा" का 1870 में गठन किया गया | जिसमें सिखों के बीच में धार्मिक सुधार आन्दोलन की शुरुआत की गई | 1892 में अमृतसर में "खालसा कॉलेज" में गुरुमुखी, सिख शिक्षा और पंजाबी साहित्य को बढ़ावा देने के लिए स्थापित की गई | 1920 में पंजाब में अकाली आंदोलनों दवारा गुरुदावारों या सिख धार्मिक स्थलों के प्रबंधन को सुधार गया |

पारसियों के बीच में सुधार आन्दोलन :- 19 वीं सदी के बीच नौरोजी फरदोंजी, दादाभाई नौरोजी, एस. एस. बंगाली और दूसरे पारसियों के बीच धार्मिक सुधारों की शुरुआत हुई | सन 1851 में "रहनुमाय मंजदायासन सभा" या धार्मिक सुधार संगठन की स्थापना की गई |

भारतीय समाज पर सुधार आन्दोलन का प्रभाव :-19वीं सदी के दौरान भारतीय सामाजिक धार्मिक आन्दोलनों ने भारतीयों के बीच चेतना पैदा की तथा वैज्ञानिक और मानवीय दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया व सुधारकों ने आधुनिक विचारों व संस्कृति को आत्मसात किया | सब आन्दोलनों ने महिलाओं की स्थिति सुधार के लिए काम किया तथा जाति व्यवस्था व अश्पृश्यता की आलोचना की | वे आन्दोलन सामाजिक स्वतत्रंता, समानता और भाईचारे की दिशा में कार्य करते थे | 1856 में पारित कानून से पुनर्विवाह संभव बन गया | बाल विवाह रोकने हेतु शारदा अधिनियम 1929 को पारित किया गया | माहिलाएं परदे से बाहर आई और नौकारियां करने लगी | धार्मिक सुधार आन्दोलन ने भारतीयों के मन में आत्म सम्मान, आत्मविश्वास और देश के प्रति गर्व का भाव जगाया |